अध्याय चक्र।

१	२	३	४	५	६	[illegible]

दोहाचक्र.

[illegible]	२	३	४	५	६	७
२४	२५	२६	२७	२८	२९	८
२३	४०	४१	४२	४३	३०	९
२२	३९	४८	४९	४४	३१	१०
२१	३८	४७	४६	४५	३२	११
२०	३७	३६	३५	३४	३३	१२
१९	१८	१७	१६	१५	१४	१३

सूचना.

जिसको प्रश्नका फल जानना हो उसको उचित है कि पहिले अध्यायचक्र पै अंगुली रक्खे और उसी के अनुसार पहिला दूसरा आदि अध्याय निकाले फिर दोहाचक्र के किसी कोठे पै अंगुली रक्खे उसही अङ्कका दोहा निकालकर शुभाशुभ फल समझ लेय।

॥ श्रीः ॥

गोस्वामीतुलसीदासजी कृत

प्रश्नरामायण

जिसको

शिवलाल गणेशीलाल ने

मुम्बई टाइप से

निज लक्ष्मीनारायण यन्त्रालय में

छपवाकर प्रकाशित किया

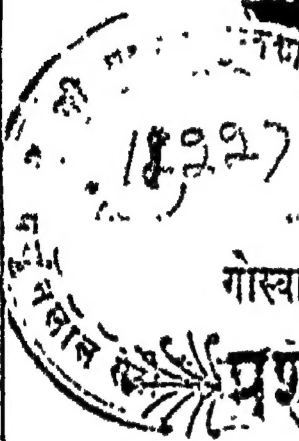
मुरादाबाद

द्वितीयवार] सन् १९०४ [२००० कापी

कल्याणानां निधानं कलिमलमथनं पावनं पावनानां
पाथेयं यन्मुमुक्षोः सपदि परपदप्राप्तये प्रस्थितस्य।
विश्रामस्थानमेकं कविवरवचसां जीवनं सज्जनानां
बीजं धर्मद्रुमस्य प्रभवतु भवतां भूतये रामनाम॥






श्रीः

गोस्वामी तुलसीदासजीकृत

प्रश्नरामायण

दोहा ।

वाणिविनायक अंवरवि, गुरुहर रमा रमेश ।
सुमिरि करहु सवकाजशुभ, मङ्गलदेशविदेश ॥१॥
गुरु सरसइ सिन्धुरवदन, शशि सुरसरि सुरगाइ ।
सुमिरचलहु मगमुदितमन, होइहिसुकृतसहाय २।
गिरा गौरि गुरु गणप हर, मङ्गल मङ्गल मूल ।
सुमिरत करतल सिद्धिसव, होइईशअनुकूल ॥ ३॥

भरत भारती रिपुदमन, गुरु गणेश बुधवार।
सुमिरत सुलभ सुधर्मफल, विद्या विनय विचार।
सुरगुरु गुरु सियरामगण, राउगिरा उरआनि।
जोकछुकरियसोहोइशुभ, खुलहिंसुमङ्गलखानि ५
शुक्र सुमिर गुरु शारदा, गणप लखन हनुमान।
करियकाज सबसाजभल, निपटहिनीकनिदान ६
तुलसी तुलसीरामसिय, सुमर लखन हनुमान।
काज बिचारेहु सोकरहु, दिनदिन बढ़ कल्याण ७।
दशरथराज न ईति भय, नहिं दुख दुरित दुकाल।
प्रमुदित प्रजा प्रसन्नसब, सबदुख सदा सुकाल।८।
कौशल्यापद नायशिर, सुमिर सुमित्रा पाँय।
करहु काज मंगल कुशल, विधिहरि शंभुसहाय ६
विधिबश वन मृगया फिरत, दीनअन्ध मुनिशाप।
सोसुनि बिपतबिषादबड़, प्रजाहिशोकसन्ताप।१०।
सुताहित विनती कीन्हनृप, कुलगुरु कहा उपाय।

होइहि भल सन्तानमुनि,प्रमुदित कोशलराय ११
पुत्रयज्ञ करवाय ऋषि , राजहि दीन्ह प्रसाद ।
सकलसुमङ्गल मूलजग, भूसुर आशिर्बाद ॥१२॥
रामजन्म गृह गृह अवध, मङ्गल गान निशान ।
शकुन सुहावन होय सुत,मंगलमोद निधान।१३।
राम भरत सानुज लखन, दशरथ बालक चार ।
तुलसी सुमिरत शकुन शुभ,मंगलकहव प्रचार१४
भूपभवन भाइन्ह सहित , रघुवर बाल विनोद ।
सुमिरतसबकल्याण जग.पगपगमंगलमोद ॥१५॥
करनबेध चूड़ाकरन , श्रीरघुवर उपवीत ।
समय सकल कल्याणमय.मंजुल मंगल गीत१६।
भरत शत्रुसूदन लखन, सहित सुमर रघुनाथ ।
करहुकाजशुभसाजसब,मिलहि सुमंगलसाथ१७
राम लखण कौशिकसहित,सुमिरहु करहुपयान।
लक्षलाभ जय जगतयश, मंगल शकुनप्रमान१८

मुनिमखपाल कृपाल प्रभु, चरणकमल उर आनु।
तजहु शोकसंकटा मिटहिं, सत्यशकुन जियजानु १९
हानि मीचु दारिद दुरित, आदि अन्तगत बीच।
राम विमुख अघ आपने, गए निशाचर नीच।२०।
शिला शापमोचन चरण, सुमिरहु तुलसीदास।
तजहु शोक संकटा मिटहि, पूजहि मनकी आस २१
सीय स्वयंवर समय भल, शकुन साध सवकाज।
कीरतविजय विवाहविधि, सकलसुमंगलसाज २२
राजत राजसमाज महँ, राम भंजि भवचाप।
शकुनसुहावनलाभबड, जयपरसभाप्रताप ॥२३॥
लाभ मोद मंगल अवधि, सिय रघुबीर विवाह।
सकलसिद्धिदायकसमय, शुभसबकाजउछाह २४
कोशलपालक वालउर, सिय मेली जयमाल।
समयसुहावन शकुनभल, मुदमंगल सवकाल २५
हरषि विबुध वरषहिं सुमन, मंगलगान निशान।

जयजय रविकुलकमलरवि, मंगलमोदनिधान २६
सतानन्द पठए जनक, दशरथ सहित समाज ।
आए तिरहुत शकुनशुभ, भएसिद्धसबकाज २७॥
दशरथ पूरण परव विधु, उदित समय संयोग ।
जनकनगरसर कुमुदगण, तुलसी प्रमुदित लोग २८
मनमलीन मानी महिप, कोक कोकनदवृन्द ।
सुहृद समाज चकोरचित, प्रमुदित परमानन्द २६।
तेहि अवसर रावण नगर, अशकुन अशुभ अपार।
होहिं हानि भयमरन दुख, सूचक बारहिबार ३०
मधुमाधव दशरथ जनक, मिलवराज ऋतुराज ।
शकुन सुवननवदल सुतरु, फूलत फलत सुकाज।
विनय पराग सुप्रेमरस, सुमन सुभगसम्वाद ।
कुसुमित काज रसालतरु, शकुनसुकोकिलनाद ३२
उदित भानुकुल भानुलखि, लुके उलूक नरेश ।
गए गँवाइ गरूरपति, धनुमिषहये महेश॥३३॥

चारि चारु दशरथ कुमर, निरखि मुदित पुरलोग।
कोशिलेश मिथिलेश को, समय सराहन योग २४।
एक वितान विवाह सब, सुवन सुमंगलरूप।
तुलसीसांहितसमाजसुख, सुकृतसिन्धुदोउभूप ३५
दाइज भयउ अनेक विधि, सुनसिहाहि दिशिपाल
सुखसम्पति सन्तोषमय, शकुन सुमंगल माल ३६
वरदुलहिन सव परस्पर, मुदित पाइ मनकाम।
चारु चारिजोरी निरखि, दुहुसमाज अभिराम ३७
चारिउ कुमर विवाहि पुर, गवने दशरथ राउ।
भएमंजु मंगल शकुन, गुरुसुर शंभु पसाउ ३८
पंथ परशुधर आगमन, समय शोच सव काहु।
राजसमाज विषाद वड़, भयवश मिटा उछाहु ३६
रोष कलुष लोचन भ्रकुटि, पाणि परशु धनुवान।
काल करालविलोकिमुनि, सव समाजविलखान॥
प्रभुहि सौंपि सारंग मुनि, दीन्ह सुआशिरबाद।

जयमंगल सूचक शकुन, राम राम संबाद ।४१।
अवध अनन्द बधावनो , मंगल गान निसान ।
तुलसी तोरन कलसपुर,चँवर पताक वितान ४२
साज सुमंगल आरती, रहस विवश रनवास ।
मुदित मात परिछनचली,उमगत हृदयहुलास ॥
करहिं निछावर आरती. उमग उमग अनुराग ।
वर दुलहिन अनुरूपलखि.सखी सराहहिंभाग ॥
मुदित नगर नरनारिसव,शकुन सुमङ्गल मूल ।
जयधुनि मुनिसुर दुंदुभी, बाजहिं वरषहिं फूल ॥
आए कोशलपाल पुर, कुशल समाज समेत ।
समयसुनत सुमिरत सुखद,सकलसिद्धिशुभदेत॥
रूप शील वयवंश गुण, समविवाह भए चारि ।
मुदित राव रानिसकल,सानुकूल त्रिपुरारि ४७
विधि हरिहर अनुकूल अति,दशरथ राजहिआज।
देखि सराहत सिद्धसुर,संपति समय समाज ४८

शकुनप्रथम उनचासशुभ,तुलसीअति अभिराम।
सब प्रसन्न सुर भूमिसुर, गोगण गंगाराम।४६।

अथ द्वितीयाध्याय।

समयराम युवराजकर, मंगलमोद निकेतु।
शकुन सुहावन सम्पदा, सिद्ध सुमंगलहेतु ॥ १ ॥
सुरमायावश केकयी, कुसमय कीन्ह कुचाल।
कुटिलनारिमिसहोइछल,अनभलआजकिकाल२
कुसमय कुशकुन कोटिसम, रामसीय बनवास।
अनरथ अनभल अवधिजग,जानहुसरबसनास३
सोचतपुर परिजनसकल, विकलराउ रनवास।
छलमलीनमनतीयमिस,विपतिविषादविनास४
लखन रामसिय वनगमन,सकल अमंगलमूल।
सोच पोच सन्तापवश, कुसमय संशयशूल॥५॥
प्रथमवास सुरसरिनिकट,सेवा कीन्हि निषाद।
कहव शुभाशुभ शकुनफल, विसमयहरष विषाद६

चले नहाय प्रयागप्रभु, लषण सीय रघुराज ।
तुलसीजानव शकुनफल, होइय साधु समाज७
सीयराम लोने लषण, तापस वेष अनूप ।
तप तीरथ जपजागहित,शकुन सुमंगलरूप ॥८॥
सीता लषण समेतप्रभु, यमुना उतरि नहाइ ।
चले सकल संकट शमन,शकुन सुमङ्गल पाइ।६।
अवधशोक सन्तापवश, विकल सकल नरनारि ।
वाम विधाता रामविनु, मांगत मीच पुकारि।१०।
लखन सीय रघुवंशमणि, पथिकपाय उर आनि ।
चलहु अगममगसुगमशुभ,शकुनसुमंगलखानि ११
ग्राम नारि नर मुदितमन,लखन रामसियदेखि ।
होय प्रीति पहिचानविन,मान विदेशविशेखि १२
वनमुनिगणरामहिमिलहिं,मुदितसुकृतफलपाइ।
शकुनसिद्धिसाधक दरश,अभिमत होइअघाइ।१३।
चित्रकूटपयतीर प्रभु , बसे भानुकुल भानु ।

तुलसी तप जब योगहित, शकुन सुमंगल जानु १४
हंसवंश अवतंसजब, कीनवास पयवास ।
तापससाधक सिद्धमुनि, सबकहँ शकुन सुपास १५
विटपबेलि फूलहिंफलहिं, जलथल विमल विशेषि
मुदित किरात विहंगमृग, मंगल मूरति देखि १६
सींचत सीय सरोजकर, वये विटप वट वेलि ।
समउसुकालु किसानहित, शकुनसुमंगलकेलि १७
हयहाँके दक्षिणदिशा, हेरि हेरि हिहिनात ।
गये निषाद विषादवश, अवध सुमन्तहि जात। १८।
सचिब सोच व्याकुल सुनत, अशकुन अवधप्रवेश।
समाचार सुनिशोकवश, मांगी मीचु नरेश॥१६॥
राम राम कहिरामसिय, राम शरनभये राउ ।
सुमिरहि सीताराम अब, नाहिन आन उपाय २०
रामविरह दशरथमरन, मुनिमन अगम सुमीच ।
तुलसीमंगल मरणतरु, शुचिसनेह जलसींच २१।

धीर वीर रघुबीर प्रिय, सुमिरि समीर कुमार ।
अगम सुगम सबकाजकरु,करतलसिद्ध विचार२२
सुमिरि शत्रुसूदन चरण, शकुन सुमंलमानि ।
परपुरवादविवादजय,जूझजुआ जयजानि॥२३॥
सेवक सखा सुबन्धु हित,शकुन विचारु विशेपि ।
भरतनाम गुणगण विमल,सुमिर सत्यसबलेख२४
साहिब समरथ शीलनिधि,सेवत सुलभ सुजान ।
रामसुमिर सेइयसुप्रभु.शकुनकहव कल्याण।२५।
सुकृत शीलशोभा अवध, सीय सुमंगल खानि ।
सुमिरशकुनतियधरमहित,कहवसुमंगलजानि२६
ललितलषण मूरति हृदय, आन धरे धनुवान ।
करहुकाज शुभ शकुनसब.मुदमंगल कल्याण२७
राम नामपर रामते, प्रीति प्रतीति भरोस ।
सो तुलसी सुमरतसकल,शकुन सुमंगलकोस२८
गुरु आयसु आए भरत, निरखि नगर नरनारि ।

सानुज सोचत पोचविधि,लोचन मोचतवारि२६
भूपमरन प्रभुवनगवन, सबविधि अवध अनाथ।
रोवतसमुझिकुमातुकृत,मींजहाथधुनिमाथ॥३०
वेद विहित पितुकर्म्मकारि, लिये संग सबलोग।
चले चित्रकूटहिं भरत, व्याकुल राम वियोग॥३०
रामदरश हियहर्षबड, भूपति मरन विषाद।
सोचत सकल समाजसुनि,राम भरत सम्बाद ३२
सुन शिष आशिष पावरी, पाय नाय पदमाथ।
चले अवध सन्तापवश,विकललोग सबसाथ ३३
भरत नेम व्रत धर्म्मशुभ, रामचरण अनुराग।
शकुनसमुझसाहसकरिय,सिद्धहोयजपजाग ३४
चित्रकुट सब दिनबसत, प्रभु सिय लषणसमेत।
राम नाम जपजापकहि,तुलसी अभिमतदेत ३५
पयपावनि वनभूमि भलि, शैलसुहावन पीठ।
रागहि सीठ विशेष थल,विषय विरागहि मीठ३६

फटिकशिला नन्दाकिनी, सिय रघुवीर विहार।
राम भक्ति हित शकुनशुभ, भूतल भक्तिभँडार ३७
शकुन सकल संकट शमन, चित्रकूट चलिजाहु।
सीतारामप्रसाद शुभ, लघुसाधन बडलाहु॥३८
दिये अत्रितिय जानकिहि, वसन विभूषण भूरि।
रामकृपा सन्तोप सुख,होहिं सकल दुखदूरि ३९
काककुचालि विराधवध, देहतजी शरभंग।
हानि मरन सूचक शकुन,अनरथ अशुभ प्रसंग ४०
रामलषण मुनिगण मिलन, मंजुल मंगलमूल।
सतसमाज तव होइ जव, रमाराम अनुकूल ४१
मिले कुम्भसम्भव मुनिहि, लषणसीयरघुराज
तुलसीसाधु समाजसुख,सिद्धदरशशुभकाज ४२
सुन मुनि आयस प्रभु कियो, पंचवटी वसिवास।
भइमहि पावनि परसपद,भासवभांतिसुपास ४३
सरित सरोवर सजलसब,जलजाविपुल वहुरंग।

समय सुहावन शकुनशुभ,राजाप्रजाप्रसंग। ४४॥
विटपबेलि फूलहिं फलहिं,शीतल सुखदसमीर।
मुदिताबिहँगमृगमधुपगण, वनपालकदोउबीर ४५
मोदाकर गोदाबरी, विपिन सुखद सबकाल।
निर्भय मुनि जपतप करहिं,पालक रामकृपाल ४६
भेट गीध रघुराजसन, दुहुदिशि हृदयहुलास।
सेवकपाय सुसायबहि,साहिबपाय सुदास॥ ४७॥
पढहिंपढावहिं मुनितनय,आगम निगम पुरान।
शकुनसुविद्यालाभहित, जानवसमयसमान ४८
निजकर सींचत जानकी, तुलसी लाइ रसाल।
शुकदूती उनचास भलि,वरषा कृषी सुकाल।४६।

तृतीय अध्याय।

दंडकवन पावनकरन, चरणसरोज प्रभाउ।
ऊषर जामहिं खल तरहिं, होय रङ्कते राउ॥१॥
कपटरूप मन मलिनगई, शूर्पनखा प्रभुपास।

कुशकुनकठिन कुनारिकृत,कलहकलुषउपहास२
नाककान विन विकलभइ,विकटकराल कुरूप।
कुशकुन पाउन देवमग, पगपग कंटककूप ॥३॥
खरदूषण देखी दुखित, चले साजि सवसाज।
अनरथकुशकुनअघअशुभ,अनभलअखिलअकाज
कटुकुठाय करटार टाहिं, फेंकहिं फेरुकुभांति।
नीचनिशाचर मीचुवस,अनीमोहमदमाति॥५॥
रामरोपपावकप्रवल, निशिचर शलभसमान।
लरत परत जरि२ मरत, भएभसमजग जान६
सीतालषण समेतप्रभु, सोहत तुलसीदास।
हरपतसुर वरपतसुमन, शकुन सुमंगलवास॥७॥
सुभट सहस चौदह सहित, भईकाल वशजानि।
शूर्पनखा लंकहि चली,अशुभ अमंगलखानि॥८॥
वसनसकल श्रोणित समल,विकटवदन गतगात।
रोवत रावणकी सभा, तात मात हा भ्रात ॥९॥

कालकि मूरति कालिका, कालराति विकराल ।
विनपहिचाने लंकपति,सभ्रासभय तेहिकाल१०
शूर्पनखा सब भांतिगत, अशुभ अमंगल मूल ।
सभयसाढ़सातीसरिस,नृपहिप्रजाहिप्रतिकूल११
बर बशगमनतरावणहिं, अशुकन भये अपार ।
नीचगनतनहिंमीचुवश, मिलिमारीचविचार१२
इतरावण उतरामकर, मीचु जानि मारीच ।
कपट कनकमृगवेषतव, कीन्ह निशाचरनीच१३
पंचवटीबट विटपतर, सीतालखण समेत ।
सोहत तुलसीदास प्रभु, सकल सुमंगल देत१४
मायामृगपहिचानि प्रभु, चलेसीयरुचि जानि ।
वंचकचोर प्रपंचकृत, शकुन कहव हितहानि१५
सीयहरण अवसर शकुन, भय संशय संताप ।
नारिकाजहित निपट गत,प्रगट पराभव पाप१६
गीधराज रावण समर, घायल वीर बिराज ।

सूरसुयश संग्राममहि, मरण सुसाहिव काज १७
रामलषण वनवनविकल, फिरत सीयसुधिलेत।
सूचतशकुन विपादवड़, अशुभ अरिष्ट अचेत १८
रघुवरविकल विहंगलखि, सोविलोकि दोउबीर।
सियसुधि कहिसियरामकहि, तजीदेहमतिधीर १९
दशरथते दशगुणभगति, सहिततासुकरिकाज।
सोचत बंधुसमेतप्रभु, कृपासिंधुरघुराज ॥ २० ॥
तुलसी सहित सनेहनित, सुमिरहु सीताराम।
शकुनसुमंगलशुभसदा, आदिमध्यपरिणाम ।२१।
सकलकाजशुभसमउभल, शकुनसुमंगल जान।
कीरतिविजयविभूतिभलि, हियहनुमानहिं आन
सुमिर शत्रुसूदन चरण, चलहु करहु सवकाज।
शत्रु पराजय निजविजय, शकुनसुमंगलसाज २३
भरतनामसुमिरत मिटहिं. कपट कलेशकुचालि।
नीति प्रीति परतीतिहित, शकुनसुमंगलशालि २४

रामनाम कलिकाम तरु, सकल सुमंगल कन्द ।
सुमिरत करतलसिद्धिजग, पगपगपरमानंद २५
सीताचरण प्रणाम करि, सुमिरि सुनामसनेम ।
सुतियहोंहिंपति देवता, प्राणनाथ प्रियप्रेम २६
लखणललित मूरतिमधुर,सुमिरहुसहित सनेह ।
सुखसंपाति कीरतिविजय,शकुनसुमंगल गेह २७
तुलसी तुलसी मंजरी, मंगल मंजुल मूल ।
देखत सुमिरतशकुनशुभ,कल्पलताफलफूल २८
खलवल अंध कबंधवश, परेसुबंधु समेत ।
शकुनसोच संकटकहव, भूतप्रेत दुखदेत ॥२९॥
पाईनीच सुमीच भलि, मिटा महा मुनिशाप ।
विहँगमरणसियसोचमन,शकुनसभयसंताप ३०
कहिशवरीसबसीय सुधि, प्रभुसराहि फलखात ।
सोचलमयसन्तोष सुनि,शकुनसुमंगलब्रात।३१।
पवनसुवन सन भेंट भइ , भूमिसुता सुधिपाइ ।

सोचविमोचन शकुनशुभ,मिलैसुसेवकआइ ३२
रामलखण हनुमान मन, दुहुदिशिपरम उछाह।
मिलासुसाहिब सेवकहि,प्रभुहिसुसेवकलाह ३३
कीन्हसखा सुग्रीव प्रभु, दीन्हिबाहँ रघुबीर ।
शुभसनेहहित शकुनफल,मिटाहिसोचभयभीर ॥
बलीबालिबलशालिदलि, सखाकीन्हकपिराज ।
तुलसीरामकृपालको, बिरदगरीबनिवाज ॥३५॥
बंधुबिरोधनकुशलकुल, कुशकुनकोटिकुचालि ।
रावणरविकोराहसो, भयोकालवशबालि ॥३६॥
कीन्हवासबरषानिरखि, गिरबर सानुजराम ।
काजविलंबितशकुनफल, होइहिभलपरिणाम ॥
सीयसोधकपिभालसब, विदाकियेकपिनाथ ।
जतनकरहुआलसतजहु, नाइरामपदमाथ ॥३८
हनूमानहिय हरषितव, रामजुहारे जाइ ।
मंगलमूरतिमारुतिहि, सादरलीन्हबुलाइ ॥३९॥

डांटे वानर भालुसब, अवधिगयेविनकाज ।
जोआइहिसोकालवश,कोपिकहाकपिराज॥४०॥
ज्ञानशिरोमणिज्ञानजिय, कपिवलबुद्धिनिधान ।
दीन्हमुद्रिकामुदितप्रभु, पाइमुदितहनुमान ॥४१
तुलसी करतलसिद्धिसब, शकुनसुमंगलसाज ।
करिप्रणामरामहिंचलहु, साहससिद्धिसुकाज४२।
नाथ हाथ माथे धरेउ, प्रभु मुदरी मुहँ मेलि
चलेउसुमरिशारंगधरि, आनाहिसिद्धिसकेलि४३
संगनील नल कुमुदगद, जामवन्त युवराज ।
चले रामपद नाइशिर, शकुनसुमंगलसाज ४४
पैठिविवरमिलितापसिहि, अचइपानिफलुखाइ
शकुनसिद्धिसाधकदरश,अभिमतहोइअघाइ ४५
बनचर विकल विषादबश,देखिउदधि अवगाह ।
असमंजसवड़शकुनगत,विधिवशहोइ निवाह ४६
सवंसभीत संपाति लखि, हहरे हृदय हरास ।

कहतपरस्पर गीधगति, परिहरिजीवनआस ४७
नवतनु पाइ दिखाइप्रभु, महिमा कथा सुनाइ।
धरहुधीरसाहसकरहु, मुदित सीयसुधिपाइ ४८
तुलसी रामप्रभाउ कहि, मुदितचले संपाति।
शुभतीसरउनचासभल, शकुनसुमंगलपाँति ४९

अथ चतुर्थाध्याय ॥

रामजनक शुभशकुनभल, सकलसुकृतसुखसार।
पुत्रलाभ कल्याण बड़, मंगल चार विचार ॥१॥
दशरथ कुल गुरु की कृपा, सुत हित यज्ञ कराइ।
पायसपाइ विभागकरि, रानिन्ह दीन्ह बुलाइ ॥२
सब सगरभ सोहहिं सदन, सकल सुमंगलखानि
तेज प्रताप प्रसन्नता, रूपनजाहि बखानि ॥ ३ ॥
देखिसुहावन स्वप्नशुभ, सकुन सुमंगलपाइ।
कहहिं भूपसन मुदितमन, हर्ष न हृदय समाइ ४

स्वप्न शकुन सुनिराउकह, कुलगुरु आशिर्वाद।
पूजहि सबमनकामना, शंकरगौरि प्रसाद ॥ ५॥
मासपाख तिथियोगशुभ, नखत लगन ग्रहवार।
सकलसुमंगलमूलजग,राम लीन्ह अवतार॥६॥
भरतलखण रिपुदमन सब, सुनव सुमंगल मूल।
प्रगटभये नृपसुकृतफल,तुलसी विधिअनुकूल ।७
घर घर अवध वधावने, मुदित नगर नरनारि।
वरषिसुमनहरषहिंविबुध, विधित्रिपुरारिमुरारि८
मंगल गान निसाननभ , नगर मुदित नरनारि।
भूपसुकृत सुरतरुनिराखि,फरे चारुफलचारि। ६॥
पुत्रकाज कल्याणनृप, दियेदान बहुभांति ।
रहसविवश रनिवासस्ब,मुदमंगल दिनराति१०
अनुदिन अवध वधावने, नितनव मंगलमोद।
मुदितमातुपितलोगलखि,रघुवरबालविनोद ११
कर्णवेध चूड़ाकरन, लौकिक वैदिककाज ।

गुरु आयसु भूपति करत, मंगलसाज समाज १२
राज अजिर राजत रुचिर, कोशल पालक बाल
जानुपानिचर चरितवर, शकुन सुमंगलमाल १३
लहे मातपित भागबश, सुतजग जलधिललाम।
पुत्रलाभहित शकुनशुभ, तुलसी सुमिरहुराम १४
वाल विभूषण बसनधर, धूरि धूसरितअंग।
बालकेलि रघुवर करत, बालबन्धु सब संग १५
रामभरत लछमन ललित, शत्रुशमन शुभनाम।
सुमिरतदशरथसुवन सब, पूजहिं सबमनकाम१६
नामललित लीलाललित, ललितरूप रघुनाथ।
ललितबसन भूषणललित, ललितअनुजाशिशुसाथ
सुदिनसाध मंगल किए, दिये भूप ब्रतवन्ध।
अवधबधाव बिलोकिसुर, बरषत सुमनसुगंध१८
भूपति भूसुर भाटनट, याचक पुरनर नारि।
दियेदान सनमानिसब, पूजे कुलअनुसारि।१६॥

सखीसु आसिनि विप्रतिय, सनमानी सबराय ।
ईशमनाय अशीषशुभ, देहिंसनेह सुभाय ॥ २० ॥
रामकाज कल्यान सब, शकुन सुमंगलमूल ।
चिरजीवहु तुलसीशसब, कहिसुर बरष हिंफूल२१
राम जनम शुभकाज सब, कहत देव ऋषिआय ।
सुन२ मन हनुमानके, प्रेम उमँग न समाय॥२२॥
भरत श्यामतन रामसम, सबगुणरूप निधान ।
सेवक सुखदायक सुलभ, सुमरत सब कल्यान२३
ललितलाह लोने लषन, लोयन लाह निहार ।
सुतललाम लालहु ललित, लेहुललाकिफलचार।
मंगल मूरति मोदानिधि, मधुर मनोहर वेष ।
राम अनुग्रह पुत्रफल, होइहि शकुन विशेष २५॥
सोधत मखमहि जनकपुर, सीय सुमंगलखान ।
भूपति पुण्य पयोधिजगु, रमा प्रकटभइआन २६
नाम शत्रु सूदन सुभग, सुखमाशील निकेत ।

सेवतसुमरत सुलभसुख,सकल सुमंगलदेत २७
वालक कोशलपाल के, सेवक पाल कृपाल ।
तुलसीमन मानस बसत, मंगल मंजुमराल २८
जनकनन्दनी जनकपुर, जबतें प्रकटी आय ।
तबतैं सब सुखसम्पदा, अधिक २ अधिकाय २९
सीय स्वयम्बर जनकपुर, सुन २ सकल नरेश ।
आए साज समाजसज, भूषणबसन सुदेश ।३०।
चले मुदित कौशिक अवध,शकुन सुमंगलसाथ ।
आए सुन सन्मान गृह, आने कोशलनाथ॥३१॥
सादर सोलह भांति नृप, पूजि पहुनई कीन्ह ।
विनयबड़ाई देखसुन, अभिमत आशिषदीन ३२
मुनिमाँगे दशरथ दिये, रामलषन दोउभाय ।
पायशकुनफलसुकृतफल,प्रमुदितचलेलिवाय ३३
श्यामल गौर किशोरवर, धरेतूण धनुवान ।
सोहत कौशिक सहितमग,मुदमंगलकल्यान ३४

शैलसरित सर बाग वन, मृग विहंग वहुरंग।
तुलसीदेखत जातप्रभु,मुदितगाधिसुतसंग।३५।
लेत विलोचन लाभसब, बडभागी मगलोग।
रामकृपा दरशनसुगम, अगमयाग जपयोग ३६
जलद छांह मृदुमग अवनि.सुखद पवनअनुकूल
हरषत बिबुधबिलोकिप्रभु,बरषत सुरतरुफूल ३७
दलेमलिनखल राखिमख.मुनिशिष आशिपदीन
विद्या विश्वामित्रसव,सुथल समर्पितकीन ३८
अभय किएमुनि राखि मख, धरेवाण धनुभाथ।
धनुमख कौतुकजनकपुर,चले गाधिसुतसाथ ३९
गौतम तियतारन चरन, कमल आनि उरदेष।
सकल सुमंगलसिद्धिसव,करतल शकुनविशेष४०
जनक पाय प्रिय पाहुने, पूजे पूजन योग।
बालक कोशलपालके,देख मगन पुरलोग॥४१॥
सनमाने आने सदन, पूजे माति अनुराग।

तुलसीमंगल शकुनशुभ, भूर भलाई भाग ॥ ४२॥
कौशिक देखन धनुषमख, चले संग दोउभाय।
कुमरनिराखिपुरनारिसब, मुदितनयनफलपाय ४३
भूपसभा भवचाप दलि, राजत राजकिशोर।
सिद्धिसुमंगलशकुनशुभ, जयजयजयसबओर ४४
जयमय मंजुलमालउर, मंगल मूरति देखि।
गान निसानप्रसूनझरि, मंगलमोद विशेषि॥ ४५
समाचार सुन अवधपति, आए सहित समाज।
प्रीतिपरस्परमिलतमुद, शकुनसुमंगलसाज ४६
गान निशान वितान पर, विरचे बिविध बिधान।
चार विवाह उछाह बड, कुशलकाज कल्यान ४७
दाइज पाय अनेक विध, सुतसुतबधुन समेत।
अवधनाथ आए अवध, सकल सुमंगललेत ४८
चौथ चारु उनचास पुर, घर घर मंगल चार।
तुलसी सब दिन दाहिने, दशरथ राज कुमार ४९

अथ पञ्चमाध्याय ।

रामनाम कलिकामतरु, राम भक्ति सुरधेनु ।
शकुन सुमंगल मूलजग, गुरुपद पकंज रेनु ॥१॥
जलधिपार मानस अगम, रावण पालित लंक ।
सोचविकल कपिभालुसब, दुहुदिशि संकटशंक २
जामवन्त हनुमन्तवल, कहा प्रचारि प्रचारि ।
रामसुमर साहसकरिय, मानिय हिये न हारि ३
रामकाज लागि जनमजग, सुन हरषे हनुमान ।
होयपुत्र फल शकुन शुभ, रामभक्त बलवान॥४॥
कहतउछाहु बडाइकपिं, साथीसकलप्रवोधि ।
लागतरामप्रसादमोहिं, गोपदसरिसपयोधि ॥५॥
राषितोषि सवसाथशुभ, शकुन सुमंगलपाइ ।
कूदिकुधरचढिआनिउर, सीयसहितदोउभाइ॥६॥
हरिषिसुमनवरषताबिबुध, शकुन सुमंगल होत ।
तुलसीप्रभुलंघेउजलधि, प्रभुप्रतापकरिपोत ॥७॥

राहुमात माया मलिन, मारीमारुत पूत।
समयशकुनमारगमिलहिं,छलमलीनखलधूत ८
पूजापाइ मिनाकपहँ, सुरसा कपिसंबाद ।
मारग अगम सहायशुभ, होइहिरामप्रसाद॥६॥
लंकालोलुप लंकनी, काली काल कराल।
कालकरालहिदीन्हिवलि,कालरूपकापिकाल १०
मशकरूपदशकंधपुर, निशिकपि घर घर देषि।
सीयविलोकिअशोकतर, हरषविषादविशेषि ११
फरकत मंगल अंगसिय वाम विलोचन वाहु ।
त्रिजटासुनिकहशकुनफल,प्रियसंदहवडलाहु १२
शकुनसमुझित्रिजटाकहति,सुनिसियअवहींआज
मिलिहिरामसेवककाहिहि,कुशललषणरघुराज १३
तुलसीप्रभुगुणगणवरणि, आपनिवात जनाइ ।
कुशलक्षेमसुग्रीवपुर, रामलषणदोउभाइ ॥१४॥
सरुपजानकीजानिकपि, कहे सकल संकेत ।

दीन्हिमुद्रिकालीन्हिसिय,प्रीतिप्रतीतिसमेत १५
पाइनाथकरमुद्रिका, सिय हियहरप विषाद ।
प्राणनाथप्रियसेवकहि,दीन्हसुआशिरवाद॥ १६॥
नाथशपथपणरोपिकपि, कहतचरण शिरनाइ ।
नाहिंबिलंबजगदंबअब,आइगयेदोउभाइ ॥ १७ ॥
समाचारकहिसुनतप्रभु, सानुजसहितसहाय ।
आयेअवरघुवंशमणि, सोचपरिहरियमाय ॥ १८॥
गये शोचसंकट सकल, भये सुदिन जियजान ।
कौतुकसागर सेतुकरि, आयेकृपा निधान ॥ १९॥
सकलसदल यमराजपुर, चलनचहत दशकन्ध ।
कालन देखत कालवश, बीसाविलोचन अंध २०
आशिष आयसु पाइ कपि, सीयचरण शिरनाइ ।
तुलसी रावण वागफल, खात वराइ वराइ २१
शूर शिरोमणि साहसी, सुमति समीर कुमार ।
सुमिरतसवसुखसंपदा, मुदमंगलदातार ॥२२॥

शत्रुशमनपदपंकरुह, सुमिरि करहु सबकाज ।
कुशलक्षेमकल्याणशुभ, शकुनसुमंगलसाज २३
भरतभलाई की अवधि, शील सनेह निधान ।
धरमभगतिभायपसमय,शकुनकहबकल्यान २४
सेवकपाल कृपालु चित, रविकुल कैरव चंद ।
सुमिरिकरहुसबकाजशुभ, पगपगपरमानंद २५
सियपदसुमिरिसुतीय हित,शकुन सुमंगलजान ।
स्वामिसोहागिलभागबड़,पुत्रकाजकल्यान ॥२६
लछिमनपदपंकजसुमरि, शकुनसुमंगलपाइ ।
जयविभूतिकीरतिकुशल, अभिमतलाभअघाय॥
तुलसीकाननकमलवन, सकलसुमंगलवास ।
रामभगतिहितशकुनशुभ, सुमिरततुलसीदास २८
रूख निपातत खातफल, रक्षकअक्षनिपाति ।
कालरूपविकरालकपि, सभयनिशाचरजाति२६
वनउजारिजारेउ नगर, कूदि कूदि कपिनाथ ।
हाहाकारपुकारसब, आरतमारतमाथ ॥३०॥

पूछवुताइ प्रबोधि सिय, आइ गयेप्रभुपांय ।
क्षेम कुशल जयजानकी, जयजयजयरघुराय ॥३१
सुनिप्रमुदित रघुवंश मणि, सानुज सेनसमेत ।
चलेसकलमंगलशकुन, विजयसिद्धकहिदेत ॥३२
राम पयान निशाननभ, वाजहिं गाजहिं वीर
शकुन सुमंगल समरजय, कीरतकुशलशरीर ॥२३
कृपासिंधु प्रभुसिंधु सन, माँगउपंथ नदेत ।
विनयन मानहि जीवजड, डाटेनवाहिअचेत ३४
लाभ लाभ लोंबा कहत, क्षेम करी कहक्षेम ।
चलत विभीषणशकुनसुनि,तुलसीपुलकितप्रेम ॥
पाहि पाहि अशरण शरण, प्रणतपाल रघुराज ।
दियोतिलकलंकेशकहि, रामगरीबनिवाज ॥३६॥
लंक अशुभ चरचा चलति, हाटवाट घर घाट ।
रावणसहित समाजअब, जाइहिबारहबाट ३७
ऊकपातदिक दाहदिन, फेंकरहि श्वान सियार ।
उदितकेतुगत हेतुमहि, कंपति बारहिबार ३८

रामकृपा कपिभालु करि, कौतुक सागर सेतु ।
चलेपारबर्षत विबुध, सुमनसुमंगलहेत ॥३९॥
नीच निशाचर मीचुवश, चले साजि चतुरंग ।
प्रभुप्रताप पावक प्रवल, उड़िउड़ि परत पतंग४०
साजिसाजि वाहन चलहिं, यातुधान वलवान ।
अशकुनअशुभनगनहिंगत, आइकालनियरान ॥
लरतभालु कपिसुभटसव, निदरि निशाचरघोर ।
सिर पर समरथ रामसो,साहिबतुलसी तोर४२
मेघनाद अति कायभट, परे महोदर खेत ।
रावण आइजगाइ तव, कहाप्रसंगअचेत ४३
उठि विशाल विकरालबड, कुंभकरण जमुहान ।
लखिसुदेशकपिभालुदल,जनुदुकालुसमुहान ४४
राम श्याम वारिधसघन, बसन सुदामिन माल ।
बरषतसरहरषतविबुध,दलादुकालु दयाल॥४५॥
राम रावणहिं परस्पर, होति रारि रणघोर ।
लरत प्रचारि प्रचारिभट, समर शोर दुहुँ ओर४६

बीसबाहु दशशीश दलि, खंडखंड तनु कीन्ह ।
सुभटशिरोमणिलंकपति, पाछैपाँउनदीन्ह ॥४७
बिबुध बजावतदुंदभी, हरपत बरपत फूल ।
रामविराजत जीतिरण, सुरसेवकअनुकूल ॥४८
लंकाथापि बिभीषणहिं, बिबुधबसाइ सुवास ।
तुलसीजयमंगलकुशल, शुभपंचमउनचास४६॥

षष्ठाध्याय

रघुवरआयसु अमरपति, अमिय सींचिकपिभालु
सकल जिआये शकुनशुभ, सुमिरहुरामकृपालु १
सादर आनी जानकी, हनूमान प्रभुपास ।
प्रीतिपरस्पर समउशुभ, शकुनसुमंगलवास ॥२॥
सीताशपथ प्रसंग शुभ, शीतल भयउ कृशानु ।
नेमप्रेम ब्रत धरम हित, शकुनसुहावन जानु ३
सनमाने कपिभालुसब, सादर साजिविमानु ।
सीय सहित सानुजसदल, चलेभानुकुलभानु॥४

हरपतसुर वरषतसुमन, शकुन सुमंगलगान ।
अवधनाथगवने अवध, क्षेम कुशल कल्यान ॥५॥
सिंधुसरोवर सरित गिरि, कानन भूमिविभाग ।
रामादिखावत जानकिहि, उमगि२ अनुराग ॥६॥
तुलसी मंगल शकुनशुभ, कहत जोरियुगहाथ ।
हंस वंश अवतंस जय, जय जय जानकिनाथ॥७॥
अवध अनंदित लोगसव, व्योम विलोकिविमानु ।
मनहुँकोकनदकोकमन, मुदितउदितलखिभानु॥
मिले गुरुहिजन परिजनहिं,भेंटत भरतसप्रीति।
लषणरामसियकुशलपुर, आयेरिपुरणजीति॥६॥
उदवश अवधअनाथ सव, अम्बदशा दुखदेखि ।
रामलखणसीतासकल, बिकलबिषादबिशेखि ॥
मिलींमातु हितमीत गुरु, सनमाने सवलोग ।
शकुनसमयविसमयहरष,प्रियसँयोगवियोग।११
अमरअनंदितमुनिमुदित, मुदितभुबन दशचारि।
घरघरअवधवधावने, मुदितनगरनरनारि ॥ १२॥

सुदिनसोधिगुरु बेदिविधि, कियोराजअभिषेक ।
शकुन सुमंगलसिद्धिसब, दायकदोहाएक ॥१३॥
भाँतिभाँति उपहारलइ, मिलत जुहारत भूप ।
पहिरायेसनमानिसब, तुलसीशकुनअनूप॥१४।
जयधुनि गान निसानसुर, वरषत सुरतरुफूल ।
भयेराम राजाअवध, शकुन सुमंगलमूल ॥१५॥
भालुविभीषण कीशपति, पूजेसहित समाज ।
भलीभाँति सनमानिसब, विदाकिये रघुराज१६
रामराज संतोष सुख, घर बन सकल सुपास ।
तरुसुरतरुसुरधेनुमहि,भभिमतभोगविलास १७
रामराज सब काजकहँ, नीक एकही आंक ।
सकल शकुनमंगलकुशल, होइहिवारुनवांक१८
कुम्भकरण रावण सरिस, मेघनाद सेवीर ।
ढहेसमूल विशालतरु, कालनदी केतीर ॥१९॥
सकलसदल रावणसरिस,कवलितकालकराल।
सोचपोचअशकुनअशुभ,जायजीवजंजाल ॥२०॥

अविचलराज विभीषणहिं, दीन्हराजरघुराज ।
अजहुंविराजतलंकपर,तुलसीसहितसमाज २१
मंजुल मंगल मोदमय, मूरति मारुत पूत ।
सकलसिद्धिकरकमलतल,सुमिरतरघुबरदूत २२
शकुनसमयसुमिरतसुखद, भरत आचरणचारु ।
स्वामिधंरमव्रतप्रेमहित,नेमानिबाहनिहारु ॥२३॥
ललितलखणलघुबंधुपद, सुखदशकुनसबकाहु ।
सुमिरतशुभकीरतिविजय,भूमिग्रामगृहलाहु २४
रामचन्द्र मुख चन्द्रमा, चित चकोर जबहोइ ।
रामरामसबकाजशुभ,समयसुहावनसोइ ॥२५॥
भूमिनंदनी पदपद्म, सुमिरत शुभसब काज ।
बरषाभलिखेतीसुफल,प्रमुदितप्रजासुराज॥२६॥
सेवक सखा सुबंधुहित, नाइलखणपद माथ ।
कीजियप्रीतिप्रतीतिशुभ, शकुनसुमंगलसाथ२७
राम नाम रतिनामगति, राम नाम विश्वास ।
सुमिरतशुभमंगलकुसल,तुलसीतुलसीदास २८

विप्र एक बालक मृतक, राखेउ राम दुआर ।
दंपतिविलपतशोकअति, आरत करत पुकार २९
राम शोच संकोच सब, सचिव विकल संताप ।
बालकमीचुअकालभइ,रामराजकेहिपाप ॥३०॥
विबुध विमलवाणी गगन, हेतु प्रजा अपचारु ।
रामराज परिणामभल, कीजिये वेगिविचारु ३१
कोशलपाल कृपालुचित, बालक दीन्हाजिआइ ।
शकुनकुशलकल्याणशुभ, रोगीउठैनहाइ ॥ ३२॥
बालक जियाविलोकिसब, कहत उठाजनुसोइ ।
शोचविमोचनशकुनशुभ,रामकृपाभलहोइ॥३३॥
शिलासुतियभइगिरितरे, मृतक जिएजगजान ।
रामअनुग्रहशकुनशुभ, सुलभसकलकल्यान ३४
केवटनिशिचरः विहँगमृग, किए साधुसनमानि ।
तुलसीरघुवरकीकृपा,शकुनसुमंगलखानि ॥३५ ।
रामराज राजत सकल, धरम निरत नरनारि ।
राग न रोष न द्वेषदुख, सुलभ पदारथचार ॥३६॥

वकउलूक झगरतगये, अवध जहांरघुराउ ।
नीकशकुनविवरिहिझगर,होइहिधरमनिआउ ३७
यती श्वान संवादसुनि. शकुन कहव जियजानि ।
हंसवंश अवतंसपुर, विलग होतपयपानि ॥३८॥
रामकुचर चाकरहिंसव, सीतहि लाइ कलंक ।
सदाअभागीलोगजग,कहतसकोचं न शंक॥३९॥
सतीशिरोमणि सीयतजि,राखिलोग रुचिराम ।
सहै दुसहदुख शकुनगत,प्रियवियोग परिणाम ४०
वरणधरम आश्रमधरम, निरतसुखी सबलोग ।
रामराज मंगलशकुन, सुफलजोगजपयोग॥४१॥
वाजिमेध अगणित किये, दियेदान बहुभाँति ।
तुलसी राजारामजग, शकुनसुमंगल पाँति ४२।
असमंजस वडशकुनगत , सीताराम वियोग ।
गवनविदेश कलेशगलि,हानि पराभवरोग॥४३॥
तियमणि सियअपराध विनु;प्रभुपरिहरिपछतात।
सोचसमाज न राजसुख;मनमलीन कृशगात४४

पुत्रलाभ लवकुश जनम, शकुन सुहावन होइ ।
समाचार मंगल कुशल, सुखद सुनावै कोइ ॥ ४५ ॥
रामसभा लवकुश ललित, किये राम गुणगान ।
राजसमागम शकुन शुभ, सुयश लाभ सनमान ४६ ।
बालमीकि लवकुश सहित, आनी सिय मुनि राम ।
हृदय हरष जान नव प्रथम, शकुन शोक परिणाम ४७ ॥
अनरथ अशकुन अति अशुभ, सीता अवनि प्रवेश ।
समय शोक संताप मय, कलह कलङ्क कलेश ॥ ४८ ॥
सुभग शकुन उनचाजरस, रामचरित मय चारु ।
रामभगत हित सफल सब, तुलसी विमल विचारु ॥

अथ सप्तमाध्याय ।

रामलषण सानुज भरत, सुमिरत शुभ सब काज ।
सहित प्रीति प्रतीति हित, शकुन सकल शुभ काज १ ॥
सुखमुद मंगल कुमुद विधु, शकुन सरोरुह भानु ।
करहु काज सब सिद्धि शुभ, आनि हिये हनुमानु ।२ ॥
रामकाज मणि हेमहय, रामरूप रविवार ।

कहबनीकिजयलाभशुभ,शकुनसमय अनुसार ३॥
रसगोरस खेती सकल , विप्रकाज शुभसाज।
रामअनुग्रह सोमदिन, प्रमुदितप्रजासुराज॥४॥
मंगलमंगलभूमिहित , नृपहित जय संग्राम।
शकुनविचारबसमय सम, करिगुरुचरणप्रणाम५
विपुलबनिजविद्याबसन , बुधविशेष गृहकाज।
शकुनसुमंगलकहबशुभ, सुमिरिसीयरघुराज ६॥
गुरुप्रसादमङ्गल सकल , रामराज सबकाज।
यज्ञविवाह उछाह व्रत,शुभ तुलसी सबसाज॥७॥
शुक्रसुमंगलकाजसब , कहबशकुन शुभदेखि।
यंत्रमन्त्रमणि औषधी,साहससिद्धि विशेषि॥८॥
रामकृपाथिरकाजशुभ , शनिवासर विश्राम।
लोहमहिष गजबनिजभल. सुखसुपासगृहग्राम६
राहुकेतु उलटे चलहिं, अशुभ अमङ्गल मूल।
रुंडमुंड पाखण्डप्रिय,पसुरअमर प्रतिकूल॥१०॥
समयराहु रविगहनुगत , राजहिंप्रजहिंकलेश।

शकुनसोचसंकटविकट,कलहकलुष दुखदेश।११।
राहुसोमसंगम विषय,अशकुन उदधि अगाधु।
ईतिभीति खलदल प्रबल, सीदाहिंभूसुर साधु १२
सातपांचग्रहएकथल , चलहिं वामगतवाम ।
राजाविराजी समयगत,शुभहितसुमरहुराम।१३।
खेती वनिविद्यावनिज , सेवाशिलिपसुकाज ।
तुलसी सुरतरु सरिससब,सुफलराम के राज १४
सुधासाधु तरतरु सुमन, सुफल सुहावनि बात।
तुलसीसीतापतिभगति, शकुन सुमंगलसात १५
सिद्धसमागम संपदा , सदनशरीर सुपास ।
सीतानाथ प्रसादशुभ,शकुन सुमंगलबास॥१६॥
कौशल्या कल्याणमय, मूरति करति प्रणाम ।
शकुन सुमंगल काजशुभ,कृपाकरहिं सियराम१७
सुमिर सुमित्रा नीमजग, जेतिय लेहिं सुनेम ।
सुवनलषण रिपु दबनसे, पावहिंपति पदप्रेम १८
दशरथनाम सुकामतरु, फलइ सकल कल्याण।

नहिं सपनेहुँ संतोप सुख, जहाँतहाँमनछोभ॥२७
पय नहोइ फलखाइजपु, राम नामपट मास।
शकुन सुमंगल सिद्धसव, करतल तुलसीदास २८
बड़कलेश कारज अलप, बडीआस लहुलाहु।
उदासीन सीता रमण, समयसरिसनिरवाहु॥२९
दशदिशिदुखदारिददरित, दुसह दशा दिनदोप।
फेरे लोचनरामअब, सव सुखसाजसरोप॥३०॥
खेतीवनिजन भीखभलि, अफल उपाय कदंव।
कुसमय जानव वामविधि, रामनाम अवलंव३१
पुरुपारथ स्वारथ सकल, परमारथ परिणाम।
सुलभसिद्धि सवशकुनशुभ,सुमिरतसीताराम३२
भागभाग तजि भालुतलु, आलस ग्रसे उपाय।
अशुभअमंल शकुनसुनि, शरनरामके पाय॥३३॥
गइचरपा करपकाविकल, सूखत सालि सुनाज।
कुसमयकुशकुनकलहकलि,प्रजाहिकलेशकुराज।
तुलसी तुलसी रामसिय, सुमिरहु लषणसमेत।

धर्णिधामधन धरमसुख,सतगुणरूप निधान १६
कलह कपट कलि कैकई; सुमिरत काजनशाइ।
हानिमीचु दारिददुरित, अशकुनअशुभ अघाइ२०
रामवाम दिश जानकी, लषण दाहिनी ओर।
ध्यानसकल कल्याणमय, सुरतरु तुलसी तोर२१
मध्यमादिन मध्यमदशा, मध्यम सकल समाज।
नाइमाथ रघुनाथपद, जानव मध्यमकाज॥ २२ ॥
हितपर बढै विरोध जव, अनहित पर अनुराग।
रामविमुखविधि वामगत,शकुनअघाइ अभाग२३।
कृपण देह पाइय परेउ, विनसाधन सिधिहोइ।
सीतापति सनमुखसमुझि,जोकीजियेशुभसोइ२४
पहिलेहित परिणाम गत, वीचवीच भल पोच।
शकुनकहब असरामगति, कहाविसमेतसकोच२५
रमारमापति गौरिहर, सीताराम सनेह।
दंपति हित संपति सकल,शकुनसुमंगलगेह।२६॥
प्रीति प्रतीति न राम पद; बडीआश वड़ लोभ।

दिनदिन उदयअनंदअव, शकुन सुमंगलकेत ३५
उद्वस अवध नरेश बिन, देखदुखी नरनारि ।
राजभंग कुसमाजवड़, गतग्रहचालि बिचारि ३६
अवध प्रवेश अनंदवढ़, शकुन सुमंगल माल ।
रामतिलक अवसर कहव, सुख संतोप सुकाल ३७
रामराज बाधक बिबुध, कहव शकुन सतिभाउ ।
देख दैवकृत दोपदुख, कीजिये उचित उपाउ ३८
व्याधिविपतिसवदेवकृत,समयशकुनकहिदीन्ह ।
मंद मंथरा मोहवश, कुटिल केकईकीन्ह ॥३६॥
रामविरह दशरथ दुखित, कहति केकई काक ।
कुसमय जाय उपाय सव, केवलरामविपाक ४०
लपणराम सियवसतवन, बिरहविकल पुरलोग ।
समयशकुनकहरामवश,दुखसुखयोगावियोग।४१।
तुलसी लाइ रसालतरु,निजकर सीचति सीय।
फ़लिसफलभलशकुनशुभ,समयकहवकमनीय ४२
सुदिनसाँझ पोथीनेवाति, पूजि प्रभातसप्रेम ।

शकुनविचारब चारुमति,सादर सत्य सनेम ४३।
मुनिगनि दिनगनि धातुगनि, दोहादेखिविचारि ।
देशकरमकरताबचन,शकुनसमयअनुहारि ।४४।
शकुनसत्यशशिनयनगुण.अवधिअधिकनयवान।
होइसफलशुभजासुजसि,प्रीतिप्रतीतप्रमान ४५
गुरुगणेश हरगौरिसिय, रामलषण हनुमान ।
तुलसीसादरसुमिरिसब,शकुनविचारविधान ४६
हनूमान सानुज भरत, रामसीय उरआनि ।
लषणसुमिरितुलसीकहत,शकुनविचारवखान ४७
जोजेहि काजहि अनुहरै, सोदोहा जगहोइ ।
शकुनसमयशुभसत्यसव,कहवरामगतिगोइ ४८
गुणविश्वास विचित्रमणि, शकुन मनोहर हार ।
तुलसीरघुबर भक्तउर,विलसतविमलविचार ४९

इतिश्रीगोस्वामि तुलसीदासजीकृत
श्रीरामायण समाप्त.

पुस्तकों का सूचीपत्र ।

रामशतक—भाषाटीका सहित मूल्य .... ≈,

रामायण साहिनिछन्द—इस में सम्पूर्ण रामायण का सार अतिरमणीक छन्दों में वर्णित है मूल्य .... –,

श्रीरामस्वर्गारोहण—गोस्वामी तुलसीदासजी कृत –,

जानकीविजय—गोस्वामी तुलसीदासजी कृत मूल्य –)

लावनी अहिरावणवध—मूल्य ....)॥

दोहावली—मूल्य .... ≡)॥

सूररामायण—कविवर श्रीसूरदासजी कृत यह पुस्तक आजतककहीं नहींछपीकेवल हमारे यहां सुंदर अक्षरोंमें छपी तैयार है यदि रामचरितामृत पानकरना होतो इसे अवश्य लीजिये तिसपर भी कपडे की जिल्दका मूल्य..........॥)

मनुस्मृति—मूल,अन्वयांक और मेधातिथि—सर्वज्ञना-रायण-कुल्लूक राघवानन्द-नन्दन और रामचन्द कृत संस्कृत व्याख्या उपरोक्त छै टीकों के अनुसार भाषाटीका सहित चिकने कागज पर अत्युत्तम छपी है उत्तम विलायती कपड़े की जिल्द का मूल्य १) पुट्ठे की जिल्द का मूल्य ॥≈, डाकव्यय ।)